CALAVALA CUNNAN CHETTY

Dharmamurthi Rao Bahadur Calavala Cunnan Chetty was born in the Calavala family in the year 1869. His father, Chellam Chetty was a prominent member of the business community in those days. He was a senior partner in Messrs King and Company dealing in timber. After graduating from Pachaiyappa's College and Madras Christian College, Calavala Cunnan Chetty took over the family business. As a result of his persevering efforts and business acumen, he elevated Messrs King and Company to great heights which earned him wealth and fame.

Calavala Cunnan Chetty spent his wealth magnanimously on noble deeds of charity, considering wealth as merely ephemeral, which will not accompany us after death. He established a number of charitable institutions and gave large sums of money annually to the charitable endowments instituted by him in the city of Madras and other locations.

Calavala Cunnan Chetty established a Sanskrit College at Triplicane to popularize the study of ancient Sanskrit texts. Various elementary schools were started by him for the poor in the city of Madras and other places, such as a Primary School for Girls at Chintadripet, a Girls' School in Narayana Mudali Street, the Middle School at Tiruvellur, a School at Mambalam and another School in Thambu Chetty Street. He held many posts in various public charitable and service organizations.

Besides giving large monetary assistance to the Madras Social Service League, he was one of its Vice-Presidents. He also established a library for the benefit of the students of the city of Madras. He started Ayurvedic Hospitals in Triplicane, Nellore and Nungambakkam and was also managing them. Deeply moved by the sight of the children dying for want of unadulterated milk, he made arrangements for the free distribution of milk at his home at Govindappa Naick Street, George Town. He also made arrangements to feed large number of poor children. He constituted an annual grant for the Ramakrishna Mutt at Mylapore to help the needy. He constructed a building especially for the Annadana Samajam, where hundreds of poor people are fed daily. He was instrumental in starting Night Schools for Adults in economically backward areas like Perambur.

Calavala Cunnan Chetty showed great interest in the development of industries and deputed students on scholarship to Bombay for industrial training. Every Sunday, hundreds of poor people were fed by him at Krishnappa Naick Street, Park Town. He built a huge Free Choultry at Egmore for the benefit of long distance travelers and patients who come to Madras for treatment. Residents of Triplicane honored this philanthropically minded great man by conferring on him the Title of "Kodai Vallal". He made his Last Will and Testament on 19.7.1920, by which he bequeathed his entire property for the cause of education and other public charitable purposes. To fructify his vision he established a Hindu Public Charitable Trust "Dharmamurthi Rao Bahadur Calavala Cunnan Chetty's Charities" and nominated prominent citizens from Arya Vysya Community as its members including his wife Smt. Calavala Seethamma whose willing co-operation and selfless magnanimity made it possible for the Dharmamurthi to create the Trust. The Trustees of Dharmamurthi Rao Bahadur Calavala Cunnan Chetty's Charities are continuing the charitable activities as envisaged by Sri Calavala Cunnan Chetty who attained Acharya Thiruvadi in July 1920.

Dr. Annie Besant, Freedom Fighter along with leading citizens of Madras paid a tribute to late Calavala Cunnan Chetty in a Memorial Meeting held on 5th August 1920. Dr. Annie Besant said wherever help was needed, help was given by late Mr. Cunnan Chetty. She conferred the title "Dharmamurthi" on him posthumously. The citation "Rao Bahadur" was conferred by the British Government for his service to society.

Department of Posts is pleased to release a commemorative postage stamp to mark his 150th Birth Anniversary.

Credits:

Text	:	Based on information received from the proponent
Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
Department of Posts
India

कलवल कण्णन चेट्टी
CALAVALA CUNNAN CHETTY

150वीं जयंती
150th BIRTH ANNIVERSARY

विवरणिका BROCHURE

कलवल कण्णन चेट्टी

धर्ममूर्ति राव बहादुर कलवल कण्णन चेट्टी का जन्म वर्ष 1869 में कलवल घराने में हुआ था। उनके पिता श्री चेल्लम चेट्टी, उस समय के व्यावसायिक समुदाय के एक प्रतिष्ठित सदस्य थे। वे इमारती लकड़ी के उद्योग से जुड़ी मैसर्स किंग एंड कंपनी में एक वरिष्ठ भागीदार थे। पचैयप्पा कॉलेज और मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात्, कलवल कण्णन चेट्टी ने पारिवारिक व्यवसाय संभाला। अपने अथक प्रयासों और व्यावसायिक सूझ-बूझ से, उन्होंने मैसर्स किंग एंड कंपनी को व्यावसायिक सफलता के शिखर तक पहुँचाया जिसके फलस्वरूप उन्होंने अत्यधिक संपत्ति और ख्याति अर्जित की।

कलवल कण्णन चेट्टी ने अपनी संपत्ति को उदारतापूर्वक दया-धर्म के कार्यों में लगाया क्योंकि उनका यह मत था कि धन-संपत्ति क्षणभंगुर है और मृत्यु के बाद यह हमारे साथ नहीं जाएगी। उन्होंने अनेक धर्मार्थ संस्थाओं की स्थापना की और वे मद्रास और अन्य स्थानों पर उनके द्वारा स्थापित धर्मार्थ प्रतिष्ठानों को बड़ी मात्रा में धनराशि वार्षिक रूप से दिया करते थे।

कलवल कण्णन चेट्टी ने संस्कृत भाषा की प्राचीन पाठ्य पुस्तकों के अध्ययन को लोकप्रिय बनाने के लिए ट्रिप्लीकेन में एक संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की। उन्होंने मद्रास तथा कुछ अन्य स्थानों में निर्धन वर्ग के लिए अनेक प्राथमिक विद्यालयों की भी स्थापना की, जैसे चिंताद्रीपेट में प्राथमिक कन्या विद्यालय, नारायण मुदली स्ट्रीट में कन्या विद्यालय, तिरूवेल्लूर में माध्यमिक विद्यालय, माम्बलम में एक विद्यालय तथा थम्बु चेट्टी स्ट्रीट में एक अन्य विद्यालय। वे विभिन्न लोक धर्मार्थ और सेवा संगठनों में अनेक पदों पर आसीन रहे।

मद्रास समाज सेवा लीग को बड़ी मात्रा में आर्थिक सहायता प्रदान करने के अलावा, वे इसके उपाध्यक्षों में से एक थे। मद्रास शहर के विद्यार्थियों के लाभार्थ उन्होंने एक पुस्तकालय की भी स्थापना की। उन्होंने ट्रिप्लीकेन, नेल्लोर और नुंगम्बक्कम में आयुर्वेदिक अस्पताल आरंभ किए और उनका प्रबंधन भी किया। शुद्ध दूध नहीं मिलने के कारण बच्चों की मृत्यु के दृश्य से द्रवित होकर उन्होंने अपने घर, गोविंदप्पा नाइक स्ट्रीट, जॉर्ज टाउन में निशुल्क दूध के वितरण की व्यवस्था की। उन्होंने बड़ी संख्या में निर्धन बच्चों के खान-पान की व्यवस्था भी की। उन्होंने मायलापुर स्थित रामकृष्ण मठ के लिए वार्षिक अनुदान का भी गठन किया ताकि जरुरतमंद लोगों की मदद की जा सके। उन्होंने, विशेष रूप से अन्नदान समाजम के लिए एक भवन का निर्माण करवाया, जहां प्रतिदिन सैकड़ों निर्धनों को भोजन कराया जाता है। पेरम्बूर जैसे आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में प्रौढ़ों के लिए रात्रिकालीन विद्यालय आरंभ करने में उनका बड़ा योगदान था।

उद्योगों के विकास में कलवल कण्णन चेट्टी की गहन रुचि थी और औद्योगिक प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए उन्होंने सैंकड़ों विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति पर बम्बई भेजा। कृष्णप्पा नाइक स्ट्रीट, पार्क टाउन में वे प्रत्येक रविवार को सैंकड़ों निर्धनों को भोजन कराते थे। दूर-दराज के क्षेत्रों से आने वाले यात्रियों के लिए उन्होंने एग्मोर में एक विशाल निशुल्क सराय का निर्माण करवाया। ट्रिप्लीकेन के निवासियों ने इनके परोपकारी गुणों के सम्मान में इन्हें 'कोडई वल्लल' की उपाधि से सम्मानित किया। उन्होंने अपना वसीयतनामा दिनांक 19.07.1920 को तैयार करवाया, जिसमें उन्होंने अपनी समस्त संपत्ति, शिक्षा और अन्य लोक कल्याण के नाम कर दी। अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन्होंने "धर्ममूर्ति राव बहादुर कलवल कण्णन चेट्टी चैरिटीज" नाम से एक हिन्दू लोक धर्मार्थ ट्रस्ट की स्थापना की और अपनी पत्नी श्रीमती कलवल सीताम्मा, जिनके स्वैच्छिक सहयोग और निस्वार्थ उदारता के बिना धर्ममूर्ति द्वारा इस ट्रस्ट की स्थापना करना संभव नहीं हो पाता, तथा आर्य वैश्य समाज के प्रतिष्ठित नागरिकों को इसके सदस्य के रूप में नामित किया। श्री कलवल कण्णन चेट्टी ने जिन धर्मार्थ कार्यकलापों की संकल्पना की थी, वे सभी कार्यकलाप धर्ममूर्ति राव बहादुर कलवल कण्णन चेट्टी चैरिटीज द्वारा किए जा रहे हैं। श्री कलवल कण्णन चेट्टी ने जुलाई, 1920 में आचार्य श्रीपद उपाधि प्राप्त की।

महान स्वतंत्रता सैनानी डा. एनी बेसेंट तथा मद्रास के गणमान्य नागरिकों ने दिनांक 5 अगस्त, 1920 को आयोजित एक स्मृति सभा में स्वर्गीय कलवल कण्णन चेट्टी को श्रद्धांजलि अर्पित की। डा. एनी बेसेंट ने कहा कि जहाँ भी सहायता की आवश्यकता होती थी, वह सहायता स्वर्गीय श्री कण्णन चेट्टी द्वारा प्रदान की जाती थी। डा. बेसेंट ने उन्हें मरणोपरांत "धर्ममूर्ति" की उपाधि से विभूषित किया था। श्री कलवल कण्णन चेट्टी, के समाज के प्रति सेवाभाव को देखते हुए, अंग्रेजी हुकूमत ने उन्हें "राव बहादुर" की उपाधि से नवाजा।

डाक विभाग, उनकी 150वीं जयंती के अवसर पर एक स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सूचना पर आधारित

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका/विरुपण मोहर : श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	: 402345
Stamps Printed	: 402345
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: भारतीय प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00